डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र एवं बीए प्रथम खंड, वैकल्पिक हिंदी, प्रथम पत्र

प्रगतिवादी काव्य : प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि

प्रगतिवादी काव्य का आरंभ 1936 के आसपास से माना जाता है। प्रगतिवादी काव्य से तात्पर्य उस काव्यधारा से है जो मार्क्सवादी दर्शन के आलोक में सामाजिक चेतना और भावबोध को केंद्र में रखकर लिखी गई। प्रगतिवादी काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं –

1.राष्ट्रीय – अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां – यह काव्य मार्क्सवादी दर्शन से प्रभावित थी। इसमें राष्ट्रीय – अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का चित्रण हुआ है। दुनिया के चाहे जिस किसी भी कोने में कोई शोषित – पीड़ित हो, प्रगतिवादी काव्यधारा उसके प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करती है। उसके हितों का समर्थन करती है।

2.जन का चित्रण – ऐसा व्यक्ति जो दिन भर के परिश्रम से अपनी दैनिक खुराक की व्यवस्था करता है, उस जन को, उस श्रमिक को प्रगतिवादी साहित्य के केंद्र में रखा गया है। श्रमिक की पीड़ा, उसके संघर्ष इत्यादि का विशद चित्रण प्रगतिवादी काव्य में हुआ है।

3. साम्यवाद को प्रमुखता – रूस में प्रतिष्ठित साम्यवाद और पश्चिम के अन्य देशों में मार्क्सवादी दर्शन के प्रचार – प्रसार का प्रभाव भारतीय जीवन और साहित्य पर पड़ रहा था। इसलिए प्रगतिवादी साहित्य में वंचितों, पीड़ितों, शोषितों की पीड़ा का जीवंत चित्रण किया जाने लगा।

4.प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना - राजनीतिक दासता के कारण देश में एक ओर पूंजीवाद और सामंतवाद जैसी शोषक शक्तियों को प्रश्रय मिल रहा था। जनसामान्य अपार गरीबी, अशिक्षा, असुविधा और अपमान में जी रहा था। अकाल और युद्ध की भीषण विभीषिकाएँ देश को भीतर से जर्जर बना रही थी। इन्हीं कठिन परिस्थितियों के मध्य प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई, जिसका प्रथम अधिवेशन 1936 में प्रेमचंद की अध्यक्षता में लखनऊ में हुआ।

5. सामाजिक यथार्थ का चित्रण – प्रगतिवादी साहित्य में सामाजिक यथार्थ का जीवंत रूप चित्रित हुआ है। किसानों – मजदूरों के संघर्ष को प्रगतिवादी साहित्य में ज्यों का त्यों चित्रित किया गया है। कवियों ने शोषकों को अपनी कविता में फटकार भी लगाई है –

“अबे सुन बे गुलाब

भूल मत जो पाई

खुशबू रंगो आब

खून चूसा खाद का

तूने अशिष्ट

डाल पर

इतरा रहा है

कैपिटलिस्ट।"

6. सौंदर्य के प्रति नवीन दृष्टिकोण -प्रगतिवादी साहित्य में सौन्दर्य के प्रति नवीन दृष्टिकोण आया। संघर्षों और श्रम में प्रगतिवादीवादी कवियों ने सौंदर्य को देखा और चित्रित किया। प्रगतिवादी साहित्य में कल्पना के स्थान पर यथार्थ को स्वीकृति मिली तथा आभिजात्य सौन्दर्य के स्थान पर कर्मठ सौन्दर्य को प्रधानता दी गई।

7. सोद्देश्य साहित्य – प्रगतिवादी साहित्य सोद्देश्य साहित्य है। प्रगतिवादी साहित्य सामाजिक पीड़ा, संघर्ष, विषमता और कठिनाइयों का चित्रण करता है।

8. सरल भाषा का प्रयोग – छायावादी काव्य में परिनिष्ठित खड़ी बोली का प्रयोग हो रहा था। परंतु प्रगतिवादी साहित्य में सरल, सुष्पष्ट, सामान्य जनजीवन में प्रचलित भाषा का प्रयोग हुआ है। शब्दशक्ति की दृष्टि से लक्षणा और व्यंजना की अपेक्षा अभिधा को प्रधानता दी गई है। प्रतीक, बिम्ब, शब्द, मुहावरे आदि जनजीवन के बीच से ही लिए गए हैं।

इस युग के प्रमुख कवि हैं – सुमित्रानंदन पंत, निराला, केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, नागार्जुन, शिवमंगलसिंह 'सुमन', त्रिलोचन और मुक्तिबोध आदि।